आदिवासी समाज की राजनीतिक चेतना के वकास में धा र्मक संगठनों की भू मका

डॉ० करण पूनियां
सह-आचार्य,राजनीतिक वज्ञान वभाग
श्री गो वंद गुरु राजकीय महा वद्यालय, बांसवाड़ा (राज०)

सार

यह पेपर राजस्थान में अनसू चत जाति और कथा जनजातियों की वर्तमान स्थिति की जांच करता है। जैसा क सर्व वदित है, राजस्थान अनसू चत जाति और जनजाति के दृष्टिकोण की संख्या के मामले में भारतीय राज्यों में दूसरे स्थान पर है। राजस्थान के निवासी लगभग तीन दसवां हिस्सा अनसू चत जाति और घुमक्कड़ जनजाति के सदस्य हैं, जो अप्रत्या शत नहीं है क्यों क वे सबसे अ धक उत्पी ड़त समूह भी हैं। राज्य की अनसू चत जाति और जातियों जनजाति क्षेत्रों क्षेत्रों से दूर क्षेत्रों में रहता है। उनका पूर्वाग्रह और क्रूरता का एक बहुत ही भयानक इतिहास रहा है, जो टिका हुआ है और उन पर वर्तमान में नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। पछले **50** वर्षों में, सरकार ने स्वदेशी लोगों के कल्याण और वकास के लए अपनी महान देखभाल का प्रदर्शन करते हुए कई नीतिगत उपाय, कल्याणकारी कार्यक्रम और वकास कार्यक्रम शुरू कए हैं। सभी वकासों के प्रमुख लक्ष्य दूरस्थ और आदिम कई सामाजिक आ र्थक स्थिति को मूल रूप से लागू करते हैं। जनजातीय वकास के क्षेत्र में प्राप्त संबंधी शक्षा, दृष्टिकोण और वकास तकनीकों को समान रूप से प्रासं गक बनाते हैं। वास्तव में, आ धकारिक सहायता के बावजूद, स्वदेशी लोगों की सामाजिक आ र्थक स्थिति में महत्वपूर्ण बदलाव नहीं आया। जनजातीय समुदायों के अंदर ऐसी ताकतें पैदा करने के मामले में जो जनजातीय समुदायों के सामाजिक आ र्थक मानकों में बदलाव को बढ़ावा देने के लए सक्षम हैं, ऐसा लगता है क व भन्न योजना और योजना और उनके एक डाउनलोड के रूप में काम नहीं कर सकते। इस बैंक के खलाफ एक राजनीतिक दृष्टिकोण से जनजातीय मुद्दों की जांच की गई है। जनजातीय क्षेत्रों द्वारा अपने स्वयं के वर्गों के लक्ष्यों के दृष्टांतों के उपयोग की जाने वाली प्राथ मक जड़ी-बूटियों को राजनीति के रूप में वक सत कया गया है। इसके कारण, राजनीति में जनजातीय व वधताएं बढ़ी हैं और जनजातीय क्षेत्रों में काव्य आंदोलन शुरू हुए हैं।

कीवर्ड:- *धा र्मक संगठन, राजनीतिक चेतना, राजस्थान का आदिवासी समाज, आदिवासी समाज की राजनीतिक चेतना का वकास*

1. परिचय

धा र्मक संगठन जनजातीय समुदायों के वकास में अपनी यात्रा के परिणामस्वरूप तेजी से महत्वपूर्ण भू मका निभा रहे हैं। इन कारकों में उच्च स्तर की प्रेरणा, समुदाय के साथ घनिष्ठ संबंध, स्थानीय पाठ्यक्रम के प्रति प्रदर्शन, आ वष्कारशीलता और आपके काम के प्रति समर्पण शा मल हैं। इसके अलावा, धा र्मक संगठन स्थानीय स्थानीय सांकेतिक रूप से सक्षम होने में सक्षम हैं। चल रहे अध्ययन का प्राथ मक उद्देश्य क्रमशः भारतीय राज्य राजस्थान में संचा लत धर्म संगठनों का वभाजन और प्रभाव है। यह महिलाओं का व्यवहार, स्वास्थ्य, कानूनी सहायता, वत्तीय वकल्प, व्यावसायिक प्र शक्षण आदि के मुद्दों सहित महिलाओं के सत्यापन की ओर ल क्षत व भन्न प्रकार की स्वैच्छिक गति व धयों में संलग्नता को दर्शाता है।

कभी-कभी ऐसा माना जाता है क धा र्मक संगठन को सरकारी संगठन की तुलना में तीन लाभ होते हैंः (क) उनके सरकारी कर्मचारियों की तुलना में दबंग की पीड़ा को कम करने की अपनी नौकरी में अ धक कर्तव्यनिष्ठ हो सकते हैं (बी) सरकारी कर्मचारी की तुलना में ग्रामीण बन्धनों के साथ उनके बेहतर संबंध हो सकते हैं और (सी) चूं क स्वैच्छिक संगठन सख्त सख्ती शर्तों और बंधों से बंधे नहीं हैं, वे अपनी गति व धयों को जल्दी और लगातार समायोजित करने में सक्षम हो सकते हैं।

- आदिवासी वकास

स्वदेशी समुदायों के वकास के लए समान प्रावधान भारतीय सं वधान में पाए जा सकते हैं। भारतीय सं वधान की अनुसूची **5** के अनुसार, अनुसू चत जनजातियों और अनुसू चत क्षेत्रों को नियंत्रित करने और उनकी देखरेख करने के लए राज्य कार्यकारिणी की शक्ति का वस्तार कया गया है। इस शक्ति के आधार पर, राजस्थान की राज्य सरकार ने **1975** में जनजातीय क्षेत्र वकास वभाग की स्थापना की, ता क इस आदेश के अनुसार वहां स्थित जनजातीय समुदायों के लोगों के सामान्य वकास को सुगम बनाया जा सके। व्यापक रणनीति के साथ-साथ अनुसू चत जनजातियों की उन्नति के प्रयासों को सुनियोजित और समन्वित कया जाना चाहिए।

वभाग का प्राथ मक उद्देश्य आदिवासी वर्ग के जीवन स्तर को ऊपर उठाना है। यह अनुसू चत जनजातियों के एकीकृत सामाजिक-आ र्थक वकास पर अ धक जोर देकर और अनुसू चत

जनजातियों के आ थक, सामाजिक, सांस्कृतिक और बौ द्धक वकास को प्रोत्साहित करके पूरा कया जाएगा। यह अनुसू चत क्षेत्र के समग्र वकास के लए व भन्न योजनाओं की तैयारी, समन्वय, नियंत्रण और निर्देशन के माध्यम से कया जाएगा।

- राजस्थान की जनजातियाँ

राजस्थान में जनजातीय लोगों का प्रतिशत कुल जनसंख्या का लगभग **12%** है। वास्तव में, वे उस क्षेत्र में रहने वाले पहले लोग थे जो अब राजस्थान के रूप में जाना जाता है। राजस्थान, भारत की दो मुख्य जनजातियाँ भील और मीना हैं। सहरिया, गादु लया लोहार और गरा सया कुछ निम्न जनजातियाँ हैं। राजस्थान की कई जनजातियाँ उन वशेषताओं से जुड़ी हुई हैं जो उनमें समान हैं। प्रत्येक जनजाति अपनी सजावट, त्योहारों और कपड़ों के मामले में दूसरों से भन्न होती है।

राजस्थान की कुछ प्रमुख जनजातियाँ निम्न ल खत हैं:

- भील

भील, राजस्थान की सबसे बड़ी जनजाति, राज्य की कुल जनजातीय आबादी का **39%** से अ धक है। यह जनजाति बांसवाड़ा के आसपास के क्षेत्र पर हावी है। उन्हें कुशल धनुर्धर माना जाता था, और रामायण और महाभारत दोनों भील धनुर्धरों का संदर्भ देते हैं। भील अपनी आबादी को स्थिर रखने के लए राजपूतों के साथ मल गए। डूंगरपुर में आयोजित बाणेश्वर उत्सव में बहुत सारे भील एकत्र होते हैं। समारोह में, वे उत्सव में गाते और नृत्य करते हैं। भीलों के लए होली एक और उत्सव है। भील संस्कृति गहराई से अंध वश्वास पर आधारित है।

- मनास

शेखावाटी क्षेत्र और राजस्थान के निकटवर्ती पूर्वी क्षेत्रों में राजस्थान की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति मनस मनस का प्रभुत्व है। वे मूल रूप से संधु घाटी संस्कृति के निवासी थे। बड़ी आंखें, एक हल्की भूरी त्वचा, और बड़े होंठ मीनाओं के हड़ताली लक्षणों में से हैं, जो लंबे और एथलेटिक रूप से नि र्मत हैं। मनास में साक्षरता दर भीलों के समान ही खराब है। उन्होंने हाल ही में शादी की है।

- ग ड़या लोहार

ग ड़या लोहार, जो पहले एक योद्धा जनजाति थे, ने अपना नाम आकर्षक बैलगाड़ी से प्राप्त कया जिसे गडी कहा जाता था। वे आजकल मोबाइल लुहार का काम करते हैं।

सम्राट अकबर द्वारा महाराणा प्रताप को चत्तौड़गढ़ से खदेड़ने के बाद, वे अपने देश चले गए।

- गरा सया

द क्षणी राजस्थान में आबू रोड के पास गरा सया नाम से जानी जाने वाली एक गौण राजपूत जाति पाई जाती है। इस जातीय जनजाति में शादी करने की एक दिलचस्प रस्म है।

- धा र्मक संगठन :-

अलौ कक व्यवस्था के साथ मानव जाति के संबंधों को नियंत्रित करने वाली संस्थागत भू मकाओं और प्र क्रयाओं की जटिलता को हम धा र्मक संगठन कहते हैं। यह इस बात पर ध्यान दिए बिना सत्य है क कोई अलौ कक क्रम की कल्पना कैसे करता है। इसमें धा र्मक संगठन अभ्यास के नियमन के साथ-साथ सच्चे सद्धांत का प्रचार और झूठे सद्धांत का दमन शा मल हो सकता है; धा र्मक संगठन वशेषज्ञों की भर्ती, शक्षा और पेशेवर समाजीकरण की प्र क्रया; आम लोगों के बीच प्रा धकरण संरचनाएं और क्षेत्रीय और लौ कक समन्वय पर उनका अ धकार। धा र्मक संगठन के स्थानों, अव धयों, परिसरों और उपकरणों के आधार, सीमा और प्रकृति के साथ-साथ ऐसी संपत्ति और अस्थायीताओं का नियंत्रण जो धा र्मक संगठन के अ धकारियों के अ धकार से परि चत हों; और धा र्मक संगठन के क्षेत्रीय लॉट के साथ धा र्मक संगठन के अ धकारियों का समन्वय कम अध्ययन हैं, और जो मौजूद हैं, उनमें से बहुत कम समाजशास्त्रीय वश्लेषण का उपयोग करते हैं। यह इस तथ्य के बावजूद है क ढेर सारे धा र्मक संगठन अध्ययन उपलब्ध हैं। संगठन सद्धांत जैसा क यह समाजशास्त्र में स्था पत है गैर-पश्चिमी धा र्मक संगठन परंपराओं के लए बहुत सी मत अनुप्रयोग है।

- आदिवासी समाज की राजनीतिक चेतना के वकास में धा र्मक संगठनों की भू मका

यहाँ राजस्थान में आदिवासी समाज की राजनीतिक चेतना पर कुछ प्रमुख बिंदु हैं:

- राजनीतिक अ धकारों के प्रति जागरूकता:- राजस्थान में जनजातीय समुदाय में एक राजनीतिक चेतना है जिसमें मतदान के अ धकार और राजनीतिक प्रतिनि धत्व के अ धकार सहित राजनीतिक अ धकारों का ज्ञान शा मल है।
- राजनीतिक मुद्दों की समझ:- आदिवासी समाज जो राजनीतिक रूप से जागरूक हैं, उन राजनीतिक चंताओं से अवगत हैं जो उनके जीवन के तरीके पर प्रभाव डालते हैं, जिसमें सामाजिक न्याय, भेदभाव और संसाधनों तक पहुंच शा मल है।

- लोकतांत्रिक प्र क्रया में भागीदारी:- लोकतांत्रिक प्र क्रया में भाग लेना, जैसे चुनावों में मतदान करना और राजनीतिक नेताओं और संस्थानों के साथ बातचीत करना, राजनीतिक जागरूकता होने के सभी उदाहरण हैं।
- जवाबदेही की मांग:- राजनीतिक रूप से जागरूक जनजातीय समूह राजनीतिक हस्तियों और संस्थानों से जिम्मेदारी की उम्मीद करते हैं क उनकी जरूरतों और मुद्दों का ध्यान रखा जाए।
- सामाजिक न्याय की वकालत:- सामाजिक न्याय और निष्पक्षता की वकालत करना, जैसे क पूर्वाग्रह से जूझना और समावेशी वकास को बढ़ावा देना, राजनीतिक जागरूकता का एक और पहलू है।
- राजनीतिक कार्रवाई के लए लामबंदी:- अपने अ धकारों की मांग करने और राजनीतिक चंताओं को दूर करने के लए, राजनीतिक रूप से व्यस्त जनजातीय संस्कृति वरोध या अन्य प्रकार की राजनीतिक गति व धयों का आयोजन करती है।
- राजनीतिक संस्थानों में प्रतिनि धत्व:- राजनीतिक जागरूकता में राजनीतिक नेताओं की आवश्यकता भी शा मल है जो आदिवासी समूह के सामने आने वाले मुद्दों और राजनीतिक संस्थानों में प्रतिनि धत्व की मांग से अवगत हैं।

- धा र्मक संगठन द्वारा शुरू कए गए कुछ कार्यक्रम

 स्वच्छता

एसबीएम के तहत स्वच्छता अ भयान, जागरूकता श वर, शौचालय निर्माण, जल निकासी और स्कूल में पानी की टं कयों की सफाई का आयोजन कया गया। कचरे का संग्रह और कूड़ेदान उपलब्ध कराना। राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के आदिवासी छात्र स्वयंसेवकों द्वारा जल संरक्षण, बेटी बचाओ, स्वच्छ भारत मशन, व्यक्तिगत स्वच्छता और शौचालयों के उपयोग आदि मुद्दों पर जागरूकता रै लयां आयोजित की गईं। आदिवासी छात्रों के स्वयंसेवकों ने गांवों में बंद ना लयों और स्कूल परिसर की भी सफाई की।

 स्वास्थ्य

स्वास्थ्य जांच, रक्तदान, टीकाकरण, नशामुक्ति श वर, योग श वर आयोजित कए गए। को वड जागरूकता श वर, दवा, क्वाथ, मास्क, सैनिटाइजर एवं राहत सामग्री का वतरण कया गया। रै लयों और जागरूकता श वरों के माध्यम से पोषक-उद्यान, आयरन से भरपूर अनाज का सेवन और महिलाओं के स्वास्थ्य के मुद्दों पर जागरूकता को बढ़ावा दिया गया,

ग्रामीणों वशेष रूप से महिलाओं और लड़ कयों को स्वास्थ्य स्वच्छता और पोषण के महत्व के बारे में श क्षत कया गया। नेहरू युवा केंद्र, उदयपुर ने कल्याण, सकारात्मक जीवन शैली और फट इं डया पर जनजातीय युवा प्र शक्षण का आयोजन कया। स्वास्थ्य श वरों में जनजातीय महिलाओं की नि:शुल्क जांच, स्तन कैंसर जांच व आंखों की जांच की गई, उन्हें मास्क व सेनेटरी नैप कन भी प्रदान कए गए।

- कृ ष उत्पादन और आय बढ़ाने के लए हस्तक्षेप

उच्च उपज वाली फसल के साथ बीज प्रतिस्थापन, फल, सब्जी की कस्में, वैज्ञानिक फसल, उच्च आय और उत्पादकता के लए सब्जियों की खेती, फलों के पौधे का वतरण, जै वक खेती को बढ़ावा देना, मशरूम की खेती, कृ ष मशीनीकरण, प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन। कटाई के बाद की तकनीकों पर प्र शक्षण और प्रदर्शन। लहसुन डी-ब्रे कंग, एलोवेरा जेल एक्सट्रैक्शन, मक्का डी-हस्कर और प्याज के छिलके हटाने वाली मशीनें। कड़ी मेहनत को कम करने और कसानों की दक्षता बढ़ाने के लए, उन्हें निराई ऑपरेशन मशीन, बैटरी से चलने वाले नैपसैक स्प्रेयर, स्टील के डब्बे, दूध के डब्बे, बैल का जूआ, कुदाल, कुल्हाड़ी आदि प्रदान की गई।

- एएच (पशुपालन) हस्तक्षेप

एमपीयूएटी, उदयपुर ने पछवाड़े की खेती के लए **152** प्रतापधन पोल्ट्री इकाइयां वक सत कीं, आदिवासी कसानों को कड़कनाथ और प्रतापधन के अंडे है चंग, पानी की ट्रे और फी डंग ट्रे, सरोही नस्ल के हिरन वतरित करके बकरी की नस्ल सुधार, पशु उपचार और टीकाकरण श वर प्रदान कए गए। डेयरी, वर्मीकम्पोस्ट एवं अजोला इकाइयों का प्र शक्षण एवं स्थापना। 'उन्नत बकरी पालन एवं प्रबंधन' और 'कुक्कुट पालन' पर प्र शक्षण कार्यक्रम आयोजित कए। कार्यक्रम में बकरी पालन के आ र्थक महत्व, आहार प्रबंधन, टीकाकरण, कृ म मुक्ति, आवास एवं सामान्य प्रबंधन पर व्याख्यान दिया गया।

- अनुसू चत क्षेत्रों में आजी वका के अवसर

यूएसआर के तहत, राज मस्त्री, दुपहिया वाहन मरम्मत, सेल फोन मरम्मत, महिला दर्जी में प्र शक्षण के माध्यम से अनुसू चत क्षेत्र में आजी वका सुरक्षा के अवसर पैदा करने के उद्देश्य से **3** राज्य वश्व वद्यालयों द्वारा **8** अनुसू चत क्षेत्र के गांवों को गोद लया गया है। साथ ही, युवा आरएसएलडीसी, सीआईपीईटी, एमएसएमई और आरकेसीएल के केंद्रों में व भन्न पाठ्यक्रमों जैसे हेल्थ केयर एंड न र्सिंग, ब्यूटी पार्लर, हॉस्पिटै लटी, गारमेंट एंड अपैरल मे कंग, हाउस वायरिंग, इलेक्ट्रिकल, जेम एंड ज्वैलरी आदि में प्र शक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

2. अध्ययन का उद्देश्य

- राजस्थान के जनजातीय वकास में धा र्मक संगठनों की भू मका का अध्ययन करना।
- राजस्थान के आदिवासी समुदाय की राजनीतिक जागरूकता में धा र्मक संस्थाओं का योगदान।
- राजस्थान के धा र्मक संगठनों और सरकारी अ धकारियों द्वारा अपने आदिवासी लोगों की उन्नति के लए नीतियों और योजनाओं की स्थापना।
- सभी वकास परियोजनाओं का मुख्य उद्देश्य इन अलग-थलग पड़े आदिवा सयों की सामाजिक-आ र्थक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार लाना है।
- राजस्थान के आदिवासी समाज में राजनीतिक चेतना के स्तर का निर्धारण करना
- उनकी राजनीतिक भागीदारी के लए प्रेरणा के कारकों की जांच करना;
- राजनीतिक भागीदारी में अंतर-आदिवासी भन्नता का अध्ययन करना;
- आदिवासी नेताओं की उनके समाज में राजनीतिक भागीदारी के स्तर के प्रभाव की जांच करना।

3. साहित्य समीक्षा

भारत में अनुसू चत जाति और अनुसू चत जनजाति: एचसी उपाध्याय द्वारा संपादित पुस्तक अनुसू चत जाति और अनुसू चत जनजाति: एक सामाजिक-आ र्थक प्रोफ़ाइल **(1991)** में कहा गया है क अनुसू चत जाति / अनुसू चत जनजाति गरीबी में रहती है और छोटे काम करती है। उनके वातावरण में परिवर्तन ने उनकी आशाओं को जगाया है, फर भी उनकी सामाजिक आ र्थक स्थिति उन्हें करियर बदलने से रोकती है। वे इस वैश्विक क्रांति में भाग नहीं ले सकते। वे तनाव में हैं। भारतीय सं वधान अनुसू चत जातियों और जनजातियों के लए राजनीतिक और आ र्थक सीटें आर क्षत करता है। आजादी के बाद अनुसू चत जाति और अनुसू चत जनजाति के लए कार्यक्रम शुरू कए गए। केंद्र और राज्य सरकारें इनके वकास में करोड़ों का निवेश कर रही हैं।

जनजातीय क्षेत्रों में औद्योगीकरण **(1994)** में उनकी संपादित पुस्तक में, देवेंद्र ठाकुर और डीएन ठाकुर का तर्क है क जब क आदिवासी क्षेत्रों में औद्योगीकरण स्वतंत्रता से पहले शुरू हुआ था, यह स्वतंत्रता के बाद ही शुरू हुआ जब भारी उद्योग जैसे रांची में ही वंग इंजीनियरिंग, राउरकेला में लोहा और इस्पात कारखाने, भलाई, दुर्गापुर आदि की स्थापना

हुई। औद्यो गक कचरे और धुएं ने उस आदिवासी क्षेत्र को भर दिया है जो कभी साफ था। वे अकुशल मजदूरों के रूप में काम करते हैं और गरीबी और पछड़ेपन से बाहर निकलने के लए मजबूर हैं, बदले में उन्हें कुछ भी नहीं मलता है। उन्हें अपना घर और जमीन भी गंवानी पड़ सकती है। यह जनजातीय बेल्ट औद्योगीकरण का वश्लेषण करता है। औद्योगीकरण में जनजातीय अर्थशास्त्र की समीक्षा की गई है। आदिवासी बैकवाटर में बड़े, छोटे और कुटीर उद्यमों की भी स्क्रीनिंग की जाती है। इसमें ट्राइबल बेल्ट इंडस्ट्रियल कॉम्प्लेक्स शा मल है। आदिवासी औद्यो गक योजना प्रभावी रही।

अनिल कुमार संह द्वारा संपादित ट्राइब्स एंड ट्राइबल लाइफ **(1993)** में, आदिवासी समाजों ने "सभ्य" लोगों के साथ अपनी पहली मुठभेड़ के बाद से प्रगति की है। ब्रिटिश सैन्य-इतिहासकारों ने उन्हें भारत में "साम्राज्य की असभ्य जातियों" का नाम दिया, ले कन ईसाई मशनरियों ने दिखाया क वे सभ्य लोगों की तुलना में अ धक जटिल थे। ईसाई मशनरियों ने श क्षत कया, स्वास्थ्य में सुधार कया और देशी जनजातियों का आधुनिकीकरण कया। आज आदिवासी साहित्य मानव चरित्र और प्रयास की अद्भुत व वधता का प्रतिनि धत्व करता है।

संह द्वारा ल खत केएस द शेड्यूल्ड ट्राइब्स **(1994)** पीपल ऑफ इं डया प्रोजेक्ट का हिस्सा था और बड़े पैमाने पर एंथ्रोपोलॉजिकल सर्वे ऑफ इं डया की पहल का परिणाम था। इस देश में सैकड़ों समूहों, जातियों और कबीलों पर इसके प्रमाण मलते हैं। इन समुदायों को वर्णानुक्रम में क्रमबद्ध कया गया है और इसमें संस्कृति और समाज, भाषा, भूगोल, ल प, जै वक भन्नता, शक्षा स्तर और वकास के सभी क्षेत्र शा मल हैं। पुस्तक में भारत के **461** आदिवासी समूहों और उनके **172** प्रभागों को शा मल कया गया है। अरुणाचल प्रदेश और लक्षद्वीप ने पहली बार कुछ अनुसू चत जनजातियों को मान्यता दी, जिससे यह सबसे व्यापक सूची बन गई। यहां खनिज समृद्ध पहाड़ी क्षेत्र हैं जहां आदिवासी रहते हैं। वकास, वशेष रूप से शक्षा, संचार और स्वास्थ्य देखभाल ने उन्हें प्रभा वत कया है। निजी संपत्ति मौजूद है। आधुनिक व्यवसाय, वशेषकर सरकारी सेवा, पुराने लोगों की जगह ले रहे हैं, जो कम हो गए हैं।

चौधरी और सौमेंद्र मोहन पटनायक द्वारा ल खत सुकांत के. इं डयन ट्राइब्स एंड द मेनस्ट्रीम **(2008)** मुख्यधारा की भारतीय सभ्यता और जनजातीय मान्यताओं के बीच वभाजन की जांच करता है। यहाँ, हम इस वरोधाभास और इसके सामाजिक-राजनीतिक

परिणामों की व्याख्या करने का प्रयास करते हैं। माइक्रो और मैक्रो जांच जनजातीय समुदायों पर मानक मानवशास्त्रीय सद्धांतों पर सवाल उठाती है। वैकल्पिक रूप से, हम आदिवा सयों को पी ड़त और राष्ट्र निर्माण के साधन के रूप में देख सकते हैं।

उनकी संपादित पुस्तक ट्राइबल मूवमेंट्स इन इं डया: वजन्स ऑफ डॉ. के.एस. संह **(2012),** कमल के. मश्रा और जी. जयप्रकाशन ने डॉ. संह को एक अनुकूल वद्वान, प्रशासक और उत्साही ऐतिहा सक नृवंश वद के रूप में चत्रित कया है। डॉ. संह ने पूरे चार दशकों में आदिवासी आंदोलनों, आदिवासी कसान संबंधों, आदिवासी प्रथागत कानून, आदिवासी अर्थशास्त्र और अन्य पर कई अध्ययन लखे। उन्होंने इतिहासकारों और मानव वज्ञानियों को निराश करते हुए पाठकों और निर्णय निर्माताओं को अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करने के लए ऐतिहा सक अध्ययन और मानवशास्त्रीय फील्डवर्क का उपयोग कया। भारतीय जनजातीय आंदोलनों पर डॉ. संह के मौ लक कार्य इस संग्रह में शा मल हैं।

Methodology

For the present study the author select Naudhia village under Raghabpur Gram Panchayat of Purulia district, West Bengal. However, author of the present paper intense to specific indigenous group i.e. Kora-Mudi from Mudi para hamlet in the Methodology

For the present study the author select Naudhia village under Raghabpur Gram Panchayat of Purulia district, West Bengal. However, author of the present paper intense to specific indigenous group i.e. Kora-Mudi from Mudi para hamlet in the Methodology

For the present study the author select Naudhia village under Raghabpur Gram Panchayat of Purulia district, West Bengal. However, author of the present paper intense to specific indigenous group i.e. Kora-Mudi from Mudi para hamlet in the Methodology

For the present study the author select Naudhia village under Raghabpur Gram Panchayat of Purulia district, West Bengal. However, author of the present paper intense to specific indigenous group i.e. Kora-Mudi from Mudi para hamlet in the

4. परिकल्पना

इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, इस अध्ययन में पाँच मुख्य परिकल्पनाओं का परीक्षण करने का प्रयास कया गया है:

- जिन नेताओं के पास अ धक शक्षा है, उनके राजनीतिक गति व धयों में शा मल होने की संभावना अ धक होती है;
- जुड़ाव का स्तर पारिवारिक आय के साथ बढ़ता है;
- नेता अपने बीच के वर्षों में युवा या वरिष्ठ नेताओं की तुलना में अ धक स क्रय होते हैं;
- पुरुष नेताओं की तुलना में महिला नेता अ धक सहभागी होती हैं;
- कसी भी अन्य जनजाति से अ धक, संथाल जनजाति के स क्रय नेता हैं।

5. अनुसंधान क्रया व ध

राजस्थान के उदयपुर जिले के एक केस स्टडी के माध्यम से उपरोक्त समस्याओं की जांच करने का प्रयास कया है। पंचायती राज संस्थाओं की निर्णय लेने की प्र क्रया में औपचारिक संस्थागत नेताओं की भागीदारी के पैटर्न के अध्ययन के लए एक जिले को एक उपयुक्त 'ब्रह्मांड' के रूप में लया गया है क्यों क यह अनावश्यक खर्च और श्रम को शा मल करने के लए बहुत बड़ा नहीं है और अभी भी बहुत छोटा नहीं है। अप्रतिनि ध होना और गलत निष्कर्ष निकालना। जैसा क इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य एक आदिवासी जिले में नेताओं की राजनीतिक भागीदारी का अध्ययन करना है, मयूरभंज उस दृष्टिकोण से एक प्रतिनि ध जिला है, क्यों क राजस्थान राज्य में इसकी प्रतिशतता के संदर्भ में इसकी सबसे बड़ी जनजातीय आबादी है।**73** दूसरा, भौगो लक क्षेत्रफल, **74** जनसंख्या, **75** और पंचायती राज संस्थाओं के संजाल की दृष्टि से उदयपुर जिला कोई छोटी इकाई नहीं है। तीसरे, उदयपुर जिले को शोधकर्ता द्वारा अध्ययन के लए इस लए चुना गया है क्यों क वह इस जिले से निकटता से जुड़ा हुआ है।

- डेटा संग्रहण

अनुसंधान के वषय से संबं धत आंकड़े दो प्रमुख स्रोतों से एकत्र कए गए थे: **(i)** प्राथ मक स्रोत और **(ii)** द् वतीयक स्रोत। शोधकर्ता ने क्षेत्र से प्राथ मक डेटा एकत्र करने के लए **(ए)** साक्षात्कार, **(बी)** अवलोकन, और **(सी)** अनौपचारिक चर्चा सहित कुछ शोध तकनीकों का उपयोग कया।

कुछ मायनों में, द् वतीयक स्रोत अनंत थे। हमने अक्सर राजनीतिक भागीदारी, संचार, दृष्टिकोण, समाजीकरण, जागरूकता और प्रेरणा के साथ-साथ सामाजिक मनो वज्ञान, समाजशास्त्र, राजनीतिक मनो वज्ञान, राजनीतिक समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, संगोष्ठी रिपोर्ट, पंचायती राज की रिपोर्ट जैसे वषयों पर आ धकारिक ग्रंथों से परामर्श कया। चुनाव, अनुसू चत जातियों और अनुसू चत जनजातियों के आयोग की रिपोर्ट आदि। राजनीतिक और सामाजिक आ र्थक आंकड़ों पर जानकारी संक लत करने के लए व भन्न स्रोतों का उपयोग कया गया था। अध्ययन के वषय पर माध्य मक जानकारी कई स्रोतों से एकत्र की गई थी, जिनमें बारीपदा और खुंटा **I** में पंचायत स मति कार्यालय, जिला मुख्यालय कार्यालय, बारीपदा और कई पुस्तकालय शा मल हैं।

6. डेटा वश्लेषण

- जनजातीय समुदाय

इस तथ्य के अलावा क सभी **348** उत्तरदाता अनुसू चत जनजाति **(**एसटी**)** से संबं धत हैं, नमूने की कई अन्य वशेषताएं हैं। नमूना उत्तरदाता, जैसा क ता लका संख्या: **1** में प्रस्तुत कया गया है, दस प्रमुख अनुसू चत जनजातियों **-** संताल, बथुडी, कोल, भू मजा, भुइयां, मुंडा, खरिया, महली, देहुरी और सबर का प्रतिनि धत्व करते हैं। सु वधा के लए, जीपी और पीएस के आदिवासी नेताओं की तीन श्रे णयां **-** पंचायत स मति सदस्य **(**पीएसएम**),** सरपंच और वार्ड सदस्य **(**डब्ल्यूएम**) -** को अब से क्रमशः ए, बी और सी कहा जाएगा **-**

ता लका संख्या :1 जनजातीय समुदाय और नेताओं की श्रे णयों द्वारा उत्तरदाताओं का प्रतिशत वतरण दर्शाता है।

आदिवासी समुदाय	नेताओं की श्रे णयाँ			कुल
	A	B	C	
भील	12(45%)	12(82%)	193(65%)	217(93%)
मनास	-	32(56%)	35(12%)	67(68%)
ग ड़या लोहार	02(4%)	04(14%)	14(5%)	20(23%)
गरा सया	-	05(4%)	12(3%)	17(7%)
सहरिया	-	15(54%)	12(3%)	27(57%)
कुल	15((49%)	108(28%)	210(153%)	348(100%)

- शै क्षक

एक श क्षत आदिवासी सू चत निर्णय लेने और समुदाय के राजनीतिक और सामाजिक आ र्थक जीवन में स क्रय रूप से भाग लेने के लए बेहतर ढंग से सुसज्जित होता है। उभरते हुए देशों में शक्षा अक्सर नेताओं को गैर-नेताओं से अलग करती प्रतीत होती है। इस लए औपचारिक शक्षा प्राप्त कए बिना नेतृत्व की भू मका निभाना आश्चर्यजनक है। शै क्षक उपलब्धि के संबंध में प्रतिदर्श नेताओं को चार श्रे णयों में वभाजित कया गया है। शब्द "निरक्षर"* उन लोगों को संद र्भत करता है जिनके पास कोई औपचारिक शक्षा नहीं है। दूसरा शै क्षक समूह, जिसे "प्राथ मक" के रूप में जाना जाता है, उन नेताओं से बना है जिन्होंने VH के माध्यम से कक्षा I को पूरा कया है। "मैट्रिकुलेशन और ऊपर" और "मैट्रिकुलेशन से नीचे" क्रेडें शयल्स वाले नेता क्रमशः तीसरी और चौथी श्रे णयां बनाते हैं। नमूना नेताओं का अपे क्षत शै क्षक वतरण ता लका संख्या : 2 में दिखाया गया है।

ता लका संख्या : 2 शै क्षक मानक द्वारा उत्तरदाताओं के प्रतिशत वतरण का संकेत

शैक्ष णक स्तर	नेताओं की श्रे णयाँ			कुल
	A	B	C	
गैर साक्षर	03(10%)	02(5%)	102(32%)	260(47%)
प्राथ मक	04(24%)	04(12%)	122(41%)	130(77%)
मेट्रिक से कम	04(34%)	03(54%)	64(23%)	71(111%)
मैट्रिक और ऊपर	07(34%)	02(24%)	13(4%)	22(62%)
कुल	18(102%)	11(82%)	301(100%)	348(100%)

उत्तरदाताओं की शै क्षक पृष्ठभू म में भन्नता ता लका संख्या 2 में देखी जा सकती है। इस आदिवासी क्षेत्र में 300 डब्ल्यूएम में से 32% निरक्षर हैं, 41% ने केवल प्राथ मक वद्यालय पूरा कया है, 23% ने मैट्रिक पूरा नहीं कया है, और 4% ने पूरा कया है मैट्रिक और उच्च शक्षा। 11 सरपंचों में से 5% निरक्षर हैं, 14% ने केवल प्राथ मक वद्यालय पूरा कया है, 54% ने मैट्रिक पूरा नहीं कया है, और 24% ने इसे और उच्चतर पूरा कया है। पीएस स्तर पर 18 सदस्यों में से 10% निरक्षर हैं, 26% केवल प्राथ मक वद्यालय में हैं, 24% के पास मैट्रिक तक की शक्षा का स्तर है, और 34% के पास मैट्रिक से ऊपर की डग्री या अन्य प्रमा णकताएं हैं। इस लए, इन दो आदिवासी क्षेत्रों में अ धकांश पंचायत नेता सर्फ मैट्रिक पास हैं। ऐसा इस लए हो सकता है क्यों क आदिवासी समुदायों में शै क्षक संसाधनों और ज्ञान की कमी है, और क्यों क व भन्न जनजातियों की अर्थव्यवस्था धीरे-धीरे वक सत हो रही है।

- महिलाओं की भागीदारी

आधुनिकता, उद्योग और शहरीकरण के मार्च ने वर्तमान स्थिति में राजस्थान के व भन्न क्षेत्रों में अनुसू चत जनजाति के निवा सयों के बाहरी स्वरूप को प्रभा वत कया है। इससे आदिवासी महिलाओं की स्थिति और उनकी संस्कृति के भीतर स्थान में सुधार हो सकता है। अब यह पता लगाने का सुझाव दिया जाता है क स्थानीय राजनीति में महिलाओं के शा मल होने के बारे में निर्वा चत आदिवासी बुजुर्ग कैसा महसूस करते हैं।

ता लका **3** : जनजातीय नेताओं की उनकी प्राथ मकता के अनुसार प्रति क्रया को दर्शाना

गांव की बैठकों में महिलाओं की भागीदारी

जवाब	**%** के साथ नेता की संख्या			कुल
	पंचायत स मति सदस्य	सरपंच	वार्ड सदस्य	
हाँ	**32(3%)**	**15(14%)**	**31(2%)**	**78(37%)**
नहीं	**12(92%)**	**14(67%)**	**232(96%)**	**270(25%)**
कोई जवाब नहीं	**-**	**-**	**-**	
कुल	**44(95%)**	**29(81%)**	**263(98%)**	**348(100%)**

7. निष्कर्ष

भारत के सबसे बड़े राज्यों में से एक, राजस्थान, कुछ मायनों में अ वक सत और पछड़ा हुआ है। एसटी आबादी का **22.21** प्रतिशत है। दूसरों ने इन समुदायों की अवहेलना की है। जमींदारों और अन्य बिचौ लयों द्वारा उनका फायदा उठाया गया है। इसके अतीत में, आदिवासी नेताओं के नेतृत्व में इस शोषण के खलाफ छिटपुट वद्रोह हुए हैं। इस शोषण को समाप्त करने के लए धा र्मक संगठन ने कई निवारक और उपचारात्मक कार्रवाई की है। हालाँ क कुछ उत्साहजनक वकास हुए हैं, ले कन राजस्थान की जनजातियों की स्थिति बिगड़ रही है।

जनजातीय गांवों में अ धकांश सरपंचों और पीएसएम ने सरकारी कर्मचारियों या समाज के अन्य मलाईदार स्तरों द्वारा जनजातीय आबादी के शोषण के मुद्दे को मान्यता दी है। हालाँ क, युवा नेता जिनके पास अ धक शक्षा और पैसा है, वे इस पर अ धक ध्यान देते हैं।

हालाँ क, अन्य जातीय समूहों के नेता राजस्थान के तहत अपनी जनजातियों को फलते-फूलते देखना चाहते हैं। कुछ नेता इस उद्देश्य के साधन के रूप में 'आदिवासी परिषद' का समर्थन करते हैं। नेता अभी भी स्था पत आदिवासी राजनीतिक संरचनाओं से जुड़े हुए हैं। वे पारंपरिक नेताओं को उच्च सम्मान देते हैं। हालाँ क, जब उनके समुदाय में उत्पन्न होने वाले मुद्दों को हल करने की बात आती है, तो वे पारंपरिक लोगों के बजाय आधुनिक संस्थागत नेताओं को चुनते हैं।

शोध के अनुसार जनजातीय सदस्यों के लए जनसंपर्क करने की प्राथ मक प्रेरणा ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा, प्रतिष्ठा और राजनीतिक दबदबे को बढ़ाना है। जो व्यक्ति सरपंच और पीएसएम के रूप में चुने गए हैं, वे भ वष्य में एमएलए और एमपी बनने के लए प्र शक्षण के लए एक मंच के रूप में इसका उपयोग करके अपनी स्थिति का अ धकतम लाभ उठाना चाहते हैं।

8. संदर्भ :-

1. रामकृष्णन पी.एस. प वत्र का संरक्षण। पारिस्थितिक और नीतिगत निहितार्थ। इन: कोठारी ए, संपादक। समुदाय और संरक्षण। नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशंस; **1998.**

2. नेटो एनएएल, ब्रूक्स एसई, अल्वेस आरआरएन। ईशू से ओबाटाला तक: ब्राजील में कैंडोम्बले "टेरेरियोस" में ब ल अनुष्ठानों में इस्तेमाल होने वाले जानवर। जे एथ्नोबिओल एथनोमेड। **2009;5:23**। डीओआई: **10.1186/1746-4269-5-23**।

3. झंसन नॉर्मन, स्वैच्छिक सामाजिक सेवाएं, बा सत ब्लैकवेल और मॉर्टिन रॉबर्टसन, ऑक्सफोर्ड, **1981**, पी।**1**

4. अदेओला मो. नाइजीरिया की संस्कृति, धा र्मक त्योहारों और पारंपरिक च कत्सा में जंगली जानवरों और उनके अंगों का महत्व। पर्यावरण संरक्षण **1992;19:125-34**।

5. आरआरएन ए. ब्राजील के उत्तर और पूर्वोत्तर में जादुई-धा र्मक उद्देश्यों के लए यूरानोस्कोडन सुपर स लयोसस लनिअस **(1758)** (ट्रो पडुरी-डे) का व्यावसायीकरण। सटीबस। **2008;8:257-8**।

6. बोबो, एट अल। **Nkwende Hills** फ़ॉरेस्ट रिज़र्व के आस-पास वन्यजीवों के उपयोग और वन्य जीवों के संरक्षण में वर्जनाओं की भू मका; द क्षण-पश्चिम कैमरून। जे एथनोबिओल एथनोमेड। **2014;11:2. https://doi.org/10.1186/1746-4269-11-2**।

7. घोष टीएन, संहमहापात्र आर, मंडल एफबी। बांकुड़ा जिले के संथालों के बीच जानवरों का पारंपरिक उपयोग। वज्ञान और प्रौद्यो गकी में नवीनतम शोध का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। **2013;2(6):95-6**। **http://www.mnkjournals.com/ijlrst.htm**।

8. शाह के.बी. संस्कृति संरक्षण है। निवास स्थान हिमालय। **A Resources HimalayaFactfile IX No. II** काठमांडू, नेपाल; **2002.40**। सोदेइंडे ओए, सोइवु डीए। नाइजीरिया में पारंपरिक च कत्सा व्यापार का पायलट अध्ययन। ट्रै फक बुल**.1999; 18: 35-40**।

9. अल्वेस आरआरएन, लेओनेटो एनएएल, सैन्टाना जीजी, वएरा डब्ल्यूएलएस, अल्मीडा डब्ल्यूओ। ब्राजील में औषधीय और जादुई धा र्मक उद्देश्यों के लए उपयोग कए जाने वाले सरीसृप। एपल हर्पेटोल। **2009;6:257-274**। डीओआई: **10.1163/157075409X432913**।

10. मार्टिन जीजे। एथ्नोबॉटनी- एक व ध मैनुअल। लंदन: चैपमैन और हॉल; **1995.**

11. अली एस. द बुक ऑफ इं डयन बर्ड्स। बॉम्बे: बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी; **1996.**

12. एलेक्सियाडेस एमएन। नृवंश वज्ञान अनुसंधान के लए चयनित दिशानिर्देश। एक फील्ड मैनुअल। आ र्थक वनस्पति वज्ञान ब्रोंक्स में अ ग्रम। न्यूयॉर्क बॉटनिकल गार्डन। **1996; 10.**

13. आरआरएन ए. ब्राजील के उत्तर और पूर्वोत्तर में औषधीय और जादुई-धा र्मक उद्देश्यों के लए पशुओं का उपयोग और व्यापार। पीएचडी शोधलेख। जोआओ पेसोआ, पाराइबा: पाराइबा का संघीय वश्व वद्यालय; **2006.**

14. लोहानी यू। मध्य नेपाल के जिरेल्स के बीच जानवरों का पारंपरिक उपयोग। एथनो मेड। **2011;5(2):115-124**। डीओआई: **10.1080/09735070.2011.11886398**।

15. अल्वेस आरआरएन, ओ लवेरा एमडीजीजी, बारबोजा आरआरडी, लोपेज़ एलसीएस। कैं पना ग्रांडे, एनई ब्राजील ह्यूमन इकोलॉजी रिव्यू **2010;17:11-17** के बाजारों में वा णज्यीकृत औषधीय जानवरों का एक एथ्नोजूलोजिकल सर्वेक्षण।